अध्याय 25

बालपोर के विषय में इस्राएल का पाप

गिनती की पुस्तक में इस्राएल के अन्तिम पाप का वर्णन अध्याय 25 में दिया गया है। इस्राएली शित्तीम में मोआब के अराबा में थे जहाँ वे "मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म करने लगे" (25:1) और "बालपोर देवता को पूजने लगे" (25:3)। इससे परमेश्वर क्रोधित हो गया और उसे उत्तेजित किया कि वह लोगों को दण्ड दे।

इस्राएल के पाप का विवरण हिला देने वाले एक नोट के साथ प्रभाव डालता है। अध्याय 23 और 24 में परमेश्वर ने इस्राएल को जिस प्रकार आशीष दी और आगे भी निरन्तर आशीष देने के अद्भुत तरीकों के बारे में सुनने के बाद आगे अध्याय 25 में अच्छे समाचार की अपेक्षा की गई है। इस प्रकार की आशीषों के बारे में पढ़ने के बाद हो सकता है कि हम यह अनुमान लगाएँ कि कनान देश की ओर बढ़ते समय अब इस्राएल ने किसी अन्य समस्या का सामना नहीं किया। फिर भी परमेश्वर के लोगों ने उसकी आशीषों का प्रत्युत्तर कृतघ्नता और अनाज्ञाकारिता के साथ दिया।

इस अध्याय को समझने के लिए हमें देखना होगा कि आगे क्या हुआ और इन घटनाओं का अर्थ क्या था। इस्राएल के पाप के परिणाम गम्भीर थे।

किया गया पाप (25:1-8)

**1इस्राएली शित्तीम में रहते थे, और वे लोग मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म
करने लगे। 2और जब उन स्त्रियों ने उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता
दिया, तब वे लोग खाकर उनके देवताओं को दण्डवत् करने लगे। 3यों इस्राएली
बालपोर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा; 4और
यहोवा ने मूसा से कहा, "प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिये धूप में
लटका दे, जिससे मेरा भड़का हुआ कोप इस्राएल के ऊपर से दूर हो जाए।" 5तब
मूसा ने इस्राएली न्यायियों से कहा, "तुम्हारे जो जो आदमी बालपोर के संग मिल
गए हैं उन्हें घात करो।" 6जब इस्राएलियों की सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर रो रही थी, तो एक इस्राएली पुरुष मूसा और सब लोगों की आँखों के
सामने एक मिद्यानी स्त्री को अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया। 7इसे**

देखकर एलीआज़ार का पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता था, उसने मण्डली में से उठकर हाथ में एक बरछी ली, [8]और उस इस्राएली पुरुष के डेरे में जाने के बाद वह भी भीतर गया, और उस पुरुष और उस स्त्री दोनों के पेट में बरछी भेद दी। इस पर इस्राएलियों में जो मरी फैल गई थी वह थम गई।

आयत 1. इस्राएली शित्तीम में रहते थे। "शित्तीम" शब्द का अर्थ है "बबूल के पेड़।" NKJV इसका अनुवाद "बबूल के उपवन" के रुप में करता है। बाद में इसी स्थान को "आबेलशित्तीम" (33:49) के रूप में बताया गया। यह मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर स्थित था (33:50; यहोशू 2:1; 3:1)। यह वही स्थान लगता है जहाँ इस्राएली छावनी किए रहे जब बिलाम उन्हें आशीर्वाद दे रहा था (22:1)।

इस्राएल एक दुखद पाप में शामिल हो गया: **लोग मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म करने लगे**। "कुकर्म" यह सुझाता है कि इस्राएली पुरुषों ने मोआबी महिलाओं के साथ व्यभिचार किया। यह व्यभिचार लैंगिक था, जैसा इस अध्याय में बाद में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है, और आत्मिक रूप से था। परमेश्वर ने, एक अर्थ में, इस्राएल के साथ वाचा बाँधने के द्वारा उनसे "विवाह" किया था। इस कारण जब इस्राएली अन्य ईश्वर की आराधना करने के लिए प्रभु से फिर गए तब वे आत्मिक व्यभिचार कर रहे थे।

आयत 2. इस मामले में, धर्म और कामुकता एक साथ मिला दिए गए। मोआबी लड़कियों ने **अपने देवताओं के यज्ञों में** शामिल होने के लिए इस्राएली पुरुषों को फुसलाया। इस्राएलियों ने वह भोजन किया जिसे खाने के लिए मनाही थी और उन्होंने मोआबी **देवताओं** को भी **दण्डवत्** किया। इस पाठ्य पर प्रकाशितवाक्य 2:14 एक अच्छे टीका के रूप में सेवा प्रदान करता है: "'... तेरे यहाँ कुछ ऐसे हैं, जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया *कि वे मूर्तियों पर चढ़ाई गई वस्तुएँ खाएँ और व्यभिचार करें'"* (इसमें कुछ विशेष प्रभाव जोड़े गए हैं)।

आयत 3. यों इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे। पुराना नियम में यह पहला स्पष्ट सन्दर्भ है जो बाल की पूजा की ओर संकेत करता है; इस्राएलियों के हृदय में प्रभु की तुलना में बाल मुख्य प्रतियोगी बन गया। इस समय इस्राएलियों ने बाल, जो कि कनान देश का मुख्य देवता था, को पूजने में मोआबियों के साथ भाग लिया। आर. डेन्निस कोल ने टिप्पणी की, "उगरिटिक पाठ्यों के अनुसार बाल देवता सृष्टि की रचना के क्रम में एक प्रतिनिधि था जिसने अपने साथी अनेथ के साथ बुराई की शक्तियों को अर्थात यम्मू (समुद्र), मोत (मृत्यु) और लोटन (लिव्यातान, 'समुद्री दानव') को पराजित किया।"[1]

बाल का एक स्थानीय प्रकटीकरण प्रायः उस स्थान के नाम के द्वारा भी जाना जाता था जहाँ इसकी पूजा की जाती थी। इस कारण हम "बालपोर" के बारे में पढ़ते हैं (देखें गिनती 32:38; 33:7; यहोशू 11:17; 15:60; न्यायियों 3:3; 2 शमूएल 13:23)। "बाल" (בַּעַל, *बा' ल)* शब्द का अर्थ है "स्वामी" और इस सन्दर्भ

में इसे मोआबियों के मुख्य देवता कमोश (21:29) के साथ जोड़ा जा सकता है।[2] फिर भी जब "इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे," तब वे किसी एक देवता की नहीं परन्तु अनेक देवताओं की पूजा कर रहे थे (25:2)।

यह मानते हुए कि बाल देवता वर्षा को, वनस्पति और पशुओं के साथ साथ लोगों की उर्वरता को नियंत्रित करता था, बाल को लैंगिक विधियों और वेश्यावृत्ति के लिए भी पूजा जाता था। इस्राएली पुरुष न केवल बाल की पूजा में शामिल हुए परन्तु इस प्रकार की पूजा से जुड़े हुए लैंगिक व्यभिचार में भी शामिल हो गए। प्रभु के द्वारा मना किए हुए एक अनुचित, व्यभिचारी आत्मिक सम्बन्ध जैसी विधियों में भाग लेने के द्वारा "इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे।" कुछ लोगों ने सोचा कि इस्राएली पुरुषों ने अन्यजाति मोआबी लड़कियों के साथ समझौते का विवाह कर लिया। फिर भी अधिक उपयुक्त रूप से ऐसा जान पड़ता है कि अनुचित लैंगिक सम्बन्धों में विवाह शामिल नहीं थे क्योंकि इस अध्याय में रिकॉर्ड की गई घटना ऊपरी तौर पर एक छोटे समय में घटी। स्वाभाविक रूप से **यहोवा का कोप इस्राएल पर** उनके अनैतिक व्यवहार के कारण **भड़क उठा**।

आयतें 4, 5. परमेश्वर ने **मूसा** को निर्देश दिए कि **वह प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर धूप में लटका दे** जिससे उसका **भड़का हुआ कोप इस्राएल के ऊपर से दूर** हो जाए। **मूसा** ने **इस्राएली न्यायियों** को यह काम सौंपते हुए कहा, **"तुम्हारे जो जो आदमी बालपोर के संग मिल गए हैं उन्हें घात करो।"** वास्तव में क्या हुआ था? यह दृश्य इस प्रकार विकसित हुआ होगा:

पहला, परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उसके "भड़के हुए कोप" को "दूर करने" के लिए "प्रधानों" को लटका दे। क्या मूसा का आदेश परमेश्वर की आज्ञा से भिन्न था? क्या परमेश्वर का विचार यह था कि "सब प्रधानों" को मार डाला जाए जबकि मूसा ने आदेश दिया था कि मात्र वे ही लोग दण्डित किए जाएँगे जो दोषी हों? अनुमान लगाने के लिए यह सबसे अच्छा है कि मूसा ने सटीकता के साथ लोगों को परमेश्वर की इच्छा समझा दी और इसके बारे में बता दिया।

"न्यायियों" के लिए मूसा के आदेश के प्रकाश में, परमेश्वर का अवश्य ही यह अर्थ रहा होगा कि जिन प्रधानों ने बाल को पूजने में भाग लिया वे मार डाले जाएँ। NASB में लटकाए जाने का विशेष तरीका बताया नहीं गया है। अलग अलग संस्करण इस पद का अनुवाद भिन्न तरीकों से करते हैं: "उन्हें मार डाल और यहोवा के सम्मुख तीव्र धूप में प्रकट कर दे" (NIV); "दोषियों को यहोवा के सम्मुख धूप में लटका दे" (NKJV); "उन्हें यहोवा के सम्मुख धूप में लटका दे" (ESV); "दोषियों को यहोवा के सम्मुख जनसाधारण के बीच मार डाल" (NAB); "उन्हें धूप में सूली पर चढ़ा दे" (NJB)। अत्यन्त उपयुक्त व्याख्या यह है कि दोषियों को मार डाला जाना था और फिर उनके शरीरों को जनसाधारण के सम्मुख लटकाया जाना था जिससे यह प्रकट किया जा सके कि जो लोग परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं उनके साथ क्या होगा।

मूसा ने "न्यायियों" से कहा कि वे परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार चलें। प्रत्येक के लिए आवश्यक था कि वह उन "लोगों का घात करे" जो "बालपोर देवता को

पूजने लगे" थे (देखें निर्गमन 32:26-28)। इस आज्ञा के अनुसार करने के बारे में गिनती की पुस्तक में कोई रिकॉर्ड दर्ज नहीं है परन्तु हमारा यह अनुमान है कि इसके अनुसार किया गया।

आयतें 6-8. एक महामारी आरम्भ हो गई जिसने सम्पूर्ण जाति को नष्ट करने की चेतावनी दी। अगली घटना हिला देने वाली है। जिस समय लोग विलाप कर रहे थे और **रो** रहे थे - क्योंकि वे परमेश्वर के कोप से परिचित थे और उस मरी के कारण जो पूरी छावनी का सफ़ाया कर रही थी - उसी समय एक इस्राएली पुरुष **मूसा और सब लोगों की आँखों के सामने** अपनी **मिद्यानी** साथिन **के साथ छावनी की ओर आया। उन्होंने एक डेरे** (קֻבָּה, *कब्बाह)* **में प्रवेश किया** और अपना व्यभिचार का कार्य आरम्भ कर दिया।

कब्बाह शब्द पुराना नियम में मात्र 25:8 में ही देखने को मिलता है जो इसे परिभाषित करने में कठिनाई उत्पन्न करता है। इसके लिए अनेक सम्भावनाएँ प्रदान की गई हैं: (1) इसमें से एक यह है कि यह शब्द मिलापवाले तम्बू की ओर संकेत करता है परन्तु यह उपयुक्त नहीं लगता। 25:6 में **मिलापवाले तम्बू** का वर्णन किया गया है और वहाँ पर "डेरे" शब्द के लिए אֹהֶל (*'ओहेल)* शब्द है। (2) अन्य प्रस्ताव यह है कि उस इस्राएली पुरुष ने मिलापवाले तम्बू के निकट एक तम्बू लगा रखा था जिससे इस्राएल में वह एक प्रकार के सामाजिक समूह की वेश्यावृत्ति का संयोजन कर सके जैसा उसने मोआब में देखा था। इस प्रकार "उस पुरुष ने और उसकी याजकीय साथिन ने परमेश्वर की आराधना को लैंगिक रीतियों के अनुसार परिवर्तित करने के लिए कदम उठाया जैसा कनान का तरीका था।"[3] (3) जिस समय इस अन्यजाति संयोजन को अनदेखा नहीं किया जा सकता तब *कब्बाह* शब्द सम्भावित रूप से "पारिवारिक डेरे के आन्तरिक भाग" की ओर संकेत करता है।[4] इस समझ को इस सच्चाई के साथ सहयोग दिया जाता है कि वह इस्राएली पुरुष उस स्त्री को **अपने भाइयों के पास ले आया**।

एलीआज़ार का पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता था वह इस दृश्य से क्रोधित हो गया। एक धर्मी न्याय में, उस इस्राएली पुरुष के डेरे में जाने के बाद, वह भी भीतर गया, और उस पुरुष और उस स्त्री दोनों के पेट में अपनी बरछी भेद दी और उन्हें मार डाला। जैसा कि पीनहास ने **उस इस्राएली पुरुष के डेरे में … दोनों के पेट में** अपनी बरछी के एक ही वार से **उन्हें** भेद दिया इसका अर्थ यह है कि ऊपरी तौर पर वह जोड़ा उस समय लैंगिक सम्बन्ध में शामिल था। परमेश्वर का कोप शान्त कर दिया गया और **मरी … थम गई**।

इस्राएल के इतिहास में इस वृत्तांत का महत्व तीन चरणों में देखा जा सकता है: इस्राएली लोगों का पापमय कदम, एक याजक की निर्णायक प्रतिक्रिया और परमेश्वर का धर्मी न्याय।

इस अवसर पर इस्राएल ने एक बड़ा पाप किया। पूर्व में जंगल में लोगों ने शिकायत की और अविश्वास प्रकट किया। यहाँ पर, दस आज्ञाओं में से पहली आज्ञा (साथ ही सातवीं आज्ञा) को तोड़ते हुए लोग, सोने के बछड़े की घटना के बाद पहली बार एकमात्र सच्चे परमेश्वर की आराधना से अन्य देवता की पूजा करने के

लिए फिर गए थे। इस खुले पाप ने सम्पूर्ण जाति को भ्रष्ट कर दिया और दोषी ठहरा दिया।

इस प्रकार के पाप का दण्ड मृत्यु थी। सम्पूर्ण समुदाय को नष्ट होने से बचाने के लिए परमेश्वर ने एक पश्चात्तापी बलिदान के लिए प्रबन्ध प्रदान किया: अगर प्रधानों को मार डाला जाए तो उसका कोप थम जाएगा (25:3-5)। साथ ही, उसने लोगों पर मरी भेजी जैसा उसने अन्य अवसरों पर किया था (देखें निर्गमन 32:35; गिनती 14:37)।

इस बिन्दु पर पीनहास बीच में आया। एक धर्मी क्रोध में उसने इस्राएली पुरुष और मिद्यानी स्त्री को मार डाला जो डेरे में अनुचित लैंगिक सम्बन्ध स्थापित कर रहे थे (25:7, 8)।

इस जोड़े के व्यवहार ने पीनहास को इतना क्रोध क्यों दिलाया? इसके अनेक कारण बताए जा सकते हैं: (1) यह पाप छावनी में किया गया; शायद अन्य इस्राएली पुरुषों ने किसी अन्य स्थान पर मिद्यानी स्त्रियों के साथ व्यभिचार किया होगा परन्तु इस्राएल की पवित्र छावनी में नहीं। (2) यह पाप उस समय किया गया जब इस्राएल अपने पापों के लिए और उन पापों के दण्ड के लिए रो रहा था। (3) यह पाप खुले में किया गया था; इसे छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। वह इस्राएली पुरुष मूसा, इस्राएल और परमेश्वर के लिए खुला तिरस्कार प्रकट कर रहा था और उसी प्रभाव में उन्हें ललकार रहा था कि अगर वे कुछ कर सकें तो करके दिखाएँ। (4) उस पाप ने परमेश्वर के प्रकाशित धर्म के स्वभाव को बदलने और दूषित करने की धमकी दी। वह व्यभिचार अन्यजाति पूजा के साथ जुड़ा हुआ था।

परमेश्वर ने पीनहास की धुन को स्वीकृति दी इसलिए उसने इस्राएल के पाप के लिए प्रायश्चित के रूप में दोषी जोड़े की मृत्यु स्वीकार की और उस मरी को रोक दिया जो इस्राएली लोगों पर बड़ी संख्या में मार कर रही थी (25:8, 9)। परमेश्वर ने इस क्रिया को उसी प्रकार स्वीकार किया होगा जैसा वह पाप के एक प्रायश्चित के रूप में पशुओं की बलि स्वीकार करता था (देखें लैव्य. 17:11)।

इसका परिणाम (25:9-18)

[9]और मरी से चौबीस हज़ार मनुष्य मर गए। [10]तब यहोवा ने मूसा से कहा,
[11]"हारून याजक का पोता एलीआज़ार का पुत्र पीनहास, जिसे इस्राएलियों के बीच मेरी सी जलन उठी, उसने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहाँ तक दूर किया है, कि मैं ने जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला। [12]इसलिये तू कह दे कि मैं उससे शांति की वाचा बाँधता हूँ; [13]और वह उसके लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये, सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी, और उसने इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया।" [14]जो इस्राएली पुरुष मिद्यानी स्त्री के संग मारा गया, उसका नाम जिम्री था, वह साल का पुत्र और शिमोनियों में से अपने पितरों के घराने का प्रधान था। [15]और जो मिद्यानी

स्त्री मारी गई उसका नाम कोजबी था, वह सूर की बेटी थी, जो मिद्यानी पितरों के एक घराने के लोगों का प्रधान था। [16]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [17]"मिद्यानियों को सता, और उन्हें मार; [18]क्योंकि पोर के विषय और कोजबी के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं।" कोजबी एक मिद्यानी प्रधान की बेटी और मिद्यानियों की जाति बहिन थी, और मरी के दिन में पोर के मामले में मारी गई।

आयत 9. पीनहास के द्वारा इस प्रकार निर्णायक रूप से कदम उठाने से पहले ही मरी ने **चौबीस हज़ार** लोगों को मार डाला। मूर्तिपूजा की इस घटना का दण्ड चौबीस हज़ार लोगों की मृत्यु और प्रधानों को लटकाए जाने और इस अध्याय के प्रथम आधे भाग में दी गई जानकारी के अनुसार दोषी जोड़े की मृत्यु से परे तक पहुँच गया।

आयतें 10, 11. परमेश्वर ने मूसा से कहा, **"पीनहास ... ने मेरी जलजलाहट को इस्राएलियों पर से यहाँ तक दूर किया है, कि मैं ने जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला।"** पीनहास की प्रतिक्रिया प्रशंसनीय थी क्योंकि इसने इस्राएल के आत्मिक व्यभिचार के बारे में परमेश्वर के विचार को प्रतिबिम्बित किया। परमेश्वर ने कहा, **"उसे मेरी सी जलन उठी।"** "परमेश्वर की जलन," जैसा वेन ग्रुडेम ने कहा, "का अर्थ है कि परमेश्वर अपने आदर की सुरक्षा करने की निरन्तर खोज करता है।"[5] इस्राएली लोग, उसके अपने लोग अर्थात उसकी "दुल्हिन" थे और उनके लिए यह आवश्यक था कि वे किसी अन्य देवता को आदर या आराधना न चढ़ाएँ और न ही उसके साथ जुड़ें। जो कोई परमेश्वर की जलन में भागीदार होता है वह उसके दृढ़ निश्चय में भागीदार हो जाता है कि मात्र उसी की आराधना की जानी चाहिए और उसकी आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए। जो कोई विरोध जताता है कि इस्राएली पुरुष के पाप का परिणाम बहुत ही क्रूर था तो उसे यह स्मरण कराया जाना चाहिए कि व्यवस्था के अनुसार मूर्तिपूजा और व्यभिचार बड़े अपराध थे (निर्गमन 22:20; लैव्य. 20:10; व्यव. 22:22-24)। परमेश्वर की "जलन" उसे यह स्वीकृति नहीं देती थी कि वह अपनी दुल्हिन को किसी अन्य देवता के साथ बाँटे। मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत, इस्राएल के धर्म और "राज्य" (इस्राएल राज्य) के बीच किसी प्रकार का अन्तर नहीं किया गया। इस कारण पीनहास मृत्युदण्ड की उस आज्ञा का वहन कर रहा था जिसका अधिकारी वह जोड़ा था। इसने "इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया" (25:13)।[6]

आयतें 12, 13. दोषी जोड़े को पीनहास के द्वार मार डालने के लिए परमेश्वर की स्वीकृति ने परमेश्वर को अगुवाई दी कि वह उसे **शांति की वाचा और सदा के याजकपद की वाचा** दे जो **उसके लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये** लागू होती थी। सम्भावित रूप से "सदा के याजकपद की वाचा" ही "शांति की वाचा" है जो पीनहास और परमेश्वर के बीच बनी रहने वाली "शान्ति" का संकेत देती थी। "शांति की वाचा" को "युद्ध की वाचा" से इस प्रकार अलग किया जा सकता है जैसा मिद्यान के विरोध में परमेश्वर के द्वारा अगली कुछ आयतों में इसकी घोषणा की गई। सी. एफ़. केल और एफ़. डलेच ने यह सोचा कि महायाजक के रूप में पीनहास

की नियुक्ति इस वाचा की पूर्ति थी:

> एलीआज़ार से पीनहास तक स्थानान्तरित होने वाला महायाजक पद [न्यायियों 20:28] उसके परिवार में निरन्तर उस समय तक बना रहा, जिसमें एली के दिनों में एक लघु रूकावट एक अपवाद है [देखें 1 शमूएल 1-3; 14:3], जब तक हेरोद उसके उत्तराधिकारियों की तानाशाही के द्वारा यहूदी राज्य अन्ततः क्रमिक रूप से नष्ट नहीं हो गया।[7]

गिनती 25 में इस्राएल के पाप और निर्गमन 32 में रिकॉर्ड के रुप में दर्ज सोने का बछड़ा बनाने और उसकी पूजा करने के पाप के बीच समानान्तर देखा जा सकता है। निर्गमन की कहानी में "जब परमेश्वर और मूसा एक वाचा की स्थापना कर रहे थे तब लोग निरंकुश हो गए"; और गिनती 25 में, "जब परमेश्वर बिलाम के द्वारा इस्राएल की आशीष के लिए लड़ रहा था तब लोग निरंकुश हो गए।"[8] इन दोनों ही घटनाओं में परमेश्वर ने अन्य देवताओं की पूजा करने के दोषियों को तुरन्त मार डाला और उन लोगों को आदर दिया जो मूर्तिपूजा के विरोध में खड़े हुए (निर्गमन 32:26-28; गिनती 25:7, 8)। पहली बार परमेश्वर ने विशेष सेवा के लिए लेवी गोत्र को अलग किया; और दूसरे वृत्तांत के बाद उसने पीनहास से एक निरन्तर याजकपद का वायदा किया (निर्गमन 32:29; गिनती 25:11-13)।[9]

आयतें 14, 15. लेखक ने **मारे गए** दोनों लोगों के नाम और उनके परिवारों का नाम उनके पाप के कारण दिया। उनका नाम शायद इसलिए दिया गया क्योंकि वे अपने समुदायों के प्रमुख सदस्य थे। **इस्राएली पुरुष का नाम जिम्री था जो साल का पुत्र और शिमोनियों ... का प्रधान था**। क्या शिमोनी "इस मामले में मुख्य अपराधी" थे? प्रथम गणना और द्वितीय गणना के मध्य उनके योद्धाओं की संख्या 59,300 से घटकर 22,200 रह गई (1:23; 26:14)।[10] चौबीस हज़ार की एक बड़ी संख्या में जो लोग इस मरी में मर गए (25:9) वे भी इसी गोत्र के लोग रहे होंगे। **मिद्यानी स्त्री का नाम कोजबी** था **जो मिद्यान में** एक प्रधान, **सूर की बेटी थी**। यहाँ पर "सूर" को **पितरों के एक घराने ... के प्रधान** के रूप में बताया गया है जबकि 31:8 में उसे "मिद्यान के पाँचों राजाओं" के मध्य सूचीबद्ध किया गया है।

आयतें 16-18. बालपोर के साथ किए गए पाप के बारे में मिद्यान के लिए अन्तिम परिणाम क्या था? इसके लिए इस्राएल के द्वारा **मिद्यानियों को सताना और मार डालना** था। इस्राएलियों के लिए आवश्यक था कि वे मिद्यानियों को नष्ट कर दें क्योंकि **पोर के विषय में और कोजबी के विषय में** उन्होंने परमेश्वर के लोगों **को छल करके** [उन्हें] **सताया** था। यह ऊपरी तौर पर बिलाम की योजना के प्रति एक संकेत है कि वह प्रभु से कहे कि इस्राएली पुरुषों को पाप करने के लिए फुसलाने के लिए मिद्यानी स्त्रियों के प्रयोग के द्वारा इस्राएल को शाप दे (31:16)। अध्याय 31 वर्णन करता है कि किस प्रकार मिद्यान के पुरुषों और शासकों को मार डालने, उनकी छावनी और गाँवों को लूट लेने और जला देने और उनकी स्त्रियों, बच्चों और पशुओं को बन्दी बना लेने के द्वारा इस्राएल ने इस आज्ञा का पालन किया।

इस अवसर पर इस्राएल के द्वारा बाल को पूजना, वायदे के देश में लोगों के

प्रवेश करने के बाद इसके इतिहास के बारे में एक उपयुक्त प्रस्तावना के रूप में काम करता है। बार बार लोग बाल को और कनानियों के अन्य देवताओं को पूजने के लिए तब तक फिरते रहे जब तक परमेश्वर ने इस्राएल को अन्त में नष्ट करके यहूदा को उनकी मूर्तिपूजा के कारण गुलामी में नहीं भेज दिया।

अनुप्रयोग

एक दुखद घटना का अन्तिम कदम (अध्याय 25)

अगर इस्राएल के छुटकारे की कहानी और इसके आगे के वर्ष जंगल में बिताने को एक नाटक कहें तो इसके वर्गीकरण को एक दुखद घटना कहा जा सकता है। लोग बड़ी आशाओं के साथ मिस्र से निकले। सीनै पर एक ठहराव के बाद वे वायदे के देश में जाने के लिए आगे की यात्रा पर निकले; परन्तु शीघ्र ही उनकी आशाओं को आघात लगा - किसी बाहरी शक्तियों के कारण नहीं परन्तु उनके स्वयं के विद्रोही आचरण के कारण ऐसा हुआ। एक सम्पूर्ण पीढ़ी जंगल में मृत्यु के लिए दोषी पायी गई।

वे तब तक मरते रहे जब तक अड़तीस वर्ष के बाद, सम्भावित रूप से उस मूल पीढ़ी के मुठ्ठी भर लोग शेष नहीं रह गए। उस बिन्दु पर उन्होंने फिर से कनान की ओर यात्रा आरम्भ की और मोआब के अराबा में छावनी की। उनकी दुखद यात्रा में वहाँ पर अन्तिम वृत्तान्त घटित हुआ (अध्याय 25)।

किया गया पाप। वह पाप क्या था जिसने इतने सारे इस्राएलियों को मृत्यु तक पहुँचा दिया?

चालीस वर्षों के अन्त के निकट समय इस्राएल ने जंगल में बिताया और अब लोग फिर से वायदे के देश की ओर कूच कर रहे थे। मूसा ने चट्टान से पानी लाने के सम्बन्ध में पाप किया। मरियम और हारून मर चुके थे। इस्राएली लोगों ने यरदन के पूर्व में अनेक जातियों को हराया और उनके क्षेत्रों को जीत लिया।

ठीक इसी समय पर मोआब की ओर से इस्राएल को शाप देने के लिए बिलाम को किराए पर लिया गया परन्तु वह कुछ नहीं कर सका। जब अध्याय 25 में बताई गई घटनाएँ होने लगी तब इस्राएली लोग यरदन के पूर्व में मोआब के अराबा में छावनी किए हुए थे। मोआब राष्ट्र के प्रति उनकी संख्या और निकटता एक स्पष्ट खतरा प्रस्तुत कर रही थी। परमेश्वर के लोग वायदे के देश में जाने के लिए और उस पर स्वामित्व प्राप्त करने के लिए तैयार थे।। वे एक जीत पाने के लिए तैयार थे। इसके स्थान पर उन्होंने अपने पाप के कारण संकट का अनुभव किया:

> इस्राएली शित्तीम में रहते थे, और वे लोग मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म करने लगे। और जब उन स्त्रियों ने उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता दिया, तब वे लोग खाकर उनके देवताओं को दण्डवत् करने लगे। यों इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क उठा (25:1-3)।

पहला, उन्होंने "भुगतान के रूप में व्यभिचार किया" (KJV) अथवा "मोआबी

लड़कियों" के संग "कुकर्म किया।" अगर लोगों ने मोआब की लड़कियों से विवाह कर लिया होता तब भी लेखक यही बात ठीक ऐसे ही कहता। फिर भी ऐसा लगता है कि अधिक समय भी नहीं बीता था कि थोड़े से समय के लिए ही इस्राएली पुरुषों और "मोआब की लड़कियों" के मध्य सम्बन्ध स्थापित हो गए। इस्राएली पुरुष बाहरी लड़कियों से विवाह करने के लिए वैध इस्राएली पत्नियों को त्याग भी नहीं रहे थे।

अगला, "मोआबी लड़कियों" ने "उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता दिया," जो यह सुझाता है कि मोआबियों के देवता बाल को पूजने के सम्बन्ध में व्यभिचार किया जाता था। अन्यजाति धार्मिक क्रियाओं में कभी कभी पारम्परिक वेश्यावृत्ति भी शामिल की जाती थी। इस कारण ऐसा लगता है कि इस्राएली लोग बाल के नाम में होने वाले एक प्रकार के लैंगिक व्यभिचार में मोआबी लड़कियों के साथ जुड़ गए। किसी झूठे देवता या देवताओं को पूजने के साथ अनैतिकता जुड़ी हुई थी। इस्राएल व्यभिचार करने और प्रभु परमेश्वर को त्याग देने का दोषी था! वे "बालपोर देवता को पूजने लगे" (25:3)। लालसा और इसके शारीरिक परिणामों के फलस्वरूप परमेश्वर का परित्याग हो गया। सिनई पर इस्राएल का "विवाह" परमेश्वर के साथ हुआ परन्तु अब वह बालपोर देवता को पूजने में "लग गया" था। इस बात ने इस्राएल को आत्मिक व्यभिचार के साथ साथ शारीरिक व्यभिचार का भी दोषी बना दिया।

इस अवसर पर इस्राएल का पाप खुले रूप से निर्लज्ज होकर किया गया था। 25:6-8 में पाया जाने वाला उदाहरण विद्रोही इस्राएलियों की निडरता और नीचता का वर्णन करता है।

इस पाप के परिणाम। अध्याय 25 में किए गए पाप के परिणाम क्या रहे? (1) "प्रजा के सब प्रधानों को" धूप में लटका दिया जाना था (25:4)। न्यायियों से कहा गया कि वे उन सब लोगों को मार डालें जो उस पाप के दोषी हों (25:5)। (2) परमेश्वर ने एक मरी भेजी जिसने चौबीस हज़ार लोगों को मार डाला (25:8, 9)। (3) वह पुरुष जो खुली चुनौती का दोषी था वह पीनहास के द्वारा अपनी मिद्यानी प्रेमिका के संग मार डाला गया (25:6-8)। इन दोनों के मारे जाने से मरी थम गई। अपनी निडरता और परमेश्वर के लिए खड़ा होने के परिणामस्वरूप पीनहास को एक अनन्त याजकपद का प्रतिफल दिया गया (25:10-13)। (4) परमेश्वर ने आदेश दिए कि मिद्यानियों को नष्ट कर दिया जाए (25:17, 18)। इस्राएल ने उन आदेशों का वहन अध्याय 31 में किया। (5) एक पाँचवाँ दण्ड दिया गया। इस्राएल के पाप के लिए ज़िम्मेदार एक व्यक्ति बिलाम था। उसने मोआबियों को बताया कि वे इस्राएल को किस प्रकार पराजित कर सकते हैं। गिनती 31:16 कहती है कि "बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं स्त्रियों ने कराया गया।"

जब बिलाम ने इस्राएल को शाप देने का असफलता प्रयास किया तब भी वह बालाक से वह प्रतिफल चाहता था जिसका उसने वायदा किया था, इसलिए उसने मोआबियों को कुछ सलाह दी: "तुम इस्राएल पर आक्रमण करने के द्वारा उसे जीत

नहीं सकते क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों के लिए लड़ेगा। इसके स्थान पर अगर तुम इस्राएल को पाप में गिरा दो तो इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों के विरोध में लड़ेगा। तब इस्राएल हार जाएगा।" मोआबियों ने बिलाम की सलाह मानी और कुछ समय के लिए इससे बात बन गई। मिद्यानियों को दण्ड दिया गया और उस व्यक्ति को भी जिसने यह योजना बनाई। गिनती 31:8 बताती है कि जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों को नष्ट किया तब उन्होंने बिलाम को भी मार डाला। उसकी मृत्यु, इस्राएल के पाप के परिणामस्वरूप हुई।

वर्तमान के लोगों के लिए पाठ। मोआबियों के साथ बालपोर को पूजने में इस्राएल का पाप हमारे लिए एक चेतावनी का कार्य करता है। पाप के परिणाम प्राणघातक हैं (रोम. 6:23; देखें निर्गमन 22:20; लैव्य. 20:10; व्यव. 12:13-18; 22:22-24)। हमें याद रखना चाहिए कि सामान्य रुप में परमेश्वर पाप से घृणा करता है और पाप के खतरे के विषय में चौकस रहता है।

1. पाप दण्डित किया जाएगा। परमेश्वर के वायदे खरे हैं परन्तु उसी प्रकार उसकी चेतावनी भी पूरी होती है। जब वह अपने वचन में कहता है कि जो लोग उसे अस्वीकार करते हैं और पापमय जीवन जीते हैं वे "द्वितीय मृत्यु" का अनुभव करेंगे, तब हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि जब वह ऐसा कहता है तो उसे पूरा भी करेगा। ऐसा हो कि पुराने नियम के उदाहरण हमें याद दिला सकें कि परमेश्वर का वचन सच्चा और अपरिवर्तनीय है; जो कुछ वह कहता है वह अवश्य ही पूरा होगा।

2. लैंगिक अनैतिकता की मनाही है। एक बात जिसके विरुद्ध यह पद हमें चेतावनी देता है वह है अनैतिकता का पाप। जब पौलुस ने लिखा, "और न हम व्यभिचार करें, जैसा उनमें से कितनों ने किया; और एक दिन में तेईस हज़ार मर गये" (1 कुरि. 10:8), तब वह गिनती 25 के पाप की ओर संकेत करता है। इस दिन की घटनाओं के कारण गिनती 25:9 कहती है कि चौबीस हज़ार लोग मारे गए। लैंगिक व्यभिचार - चाहे इसमें परस्त्रीगमन अथवा व्यभिचार अथवा किसी प्रकार का अन्य लैंगिक पाप शामिल क्यों न हो - की मसीही लोगों के लिए मनाही थी जिनसे कहा गया कि "वे [स्वयं] को पवित्र बनाए रखे" (1 तीमु. 5:22; NKJV; देखें याकूब 1:27)।

3. परमेश्वर से बढ़कर कुछ भी नहीं है। जब हमारे और प्रभु परमेश्वर के बीच कुछ आ जाता है - चाहे वह धन हो या आनन्द हो या ताकत हो या फिर प्रसिद्धि ही क्यों न हो - तब हम मूर्तिपूजा के दोषी हो जाते हैं और दण्ड पाने की अपेक्षा कर सकते हैं जैसा इस्राएली लोगों के साथ हुआ।

4. मसीही लोगों को धार्मिक रूप से मिश्रित विवाह से बचना चाहिए। अकसर जवान लड़के और लड़कियाँ प्यार में पड़ जाते हैं और भविष्य के बारे में गम्भीरता से सोचे बिना ही अविश्वासियों से विवाह कर लेते हैं जो शारीरिक रूप से आकर्षक होते हैं। बाद में वे दुख के साथ पाते हैं कि उनके जीवन साथी मसीही बनने में कोई रुचि नहीं रखते। तब, प्रायः वे स्वयं परमेश्वर से दूर हो जाते हैं। अविश्वासियों के साथ का जुड़ाव उन्हें प्रभु को छोड़ देने की ओर अगुवाई देता है।

निष्कर्ष। गिनती 25 एक दुखद घटना के अन्तिम कदम का रिकॉर्ड रखता है -

अर्थात उस पीढ़ी की समाप्ति का रिकॉर्ड जिसे परमेश्वर ने मिस्र से छुड़ाया। किसी पीढ़ी का समाप्त हो जाना दुखपूर्ण है, विशेष रूप से उस समय जब उसे अधिकतर व्यभिचार, शिकायत, कृतघ्नता, विश्वास की कमी और परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता के लिए याद रखा जाना चाहिए। हमें यह प्रश्न करना चाहिए, "*हम लोग किस प्रकार याद किए जाएँगे? क्या हम उन अनैतिक, शिकायत करने वाले अथवा कृतघ्न लोगों के समान याद किए जाएँगे?*" इसके स्थान पर हम उन लोगों के समान याद किए जाएँ जिन्होंने प्रभु पर भरोसा रखा और उसकी आज्ञा मानी।

प्रश्न 1: किस पीढ़ी ने पाप किया? (25:1-9)

बालपोर का पाप पुरानी पीढ़ी का अन्तिम पाप था या नई पीढ़ी का पहला पाप था? डेन्निस टी. ओल्सन ने इसे जंगल की पीढ़ी के अन्तिम पाप के रुप में देखा - वह पाप जिसने कादेश में विद्रोह करने वाले शेष लोगों को मार डाला (अध्याय 13; 14)। उसने कहा कि सोने के बछड़े की घटना और पोर का पाप इसलिए होने दिया गया "जिससे कि ये उस पुरानी पीढ़ी के अनुभव के लिए किसी अलमारी में पुस्तकों को खड़ा रखने के लिए बनाए गए सहारे के रूप में कार्य करें जब वे सिनई पर्वत से वायदे के देश की ओर बढ़ रहे हों।"[11] इस्राएल के लिए एक नई शुरुआत का वर्णन करने के लिए अध्याय 26 प्रकट होता है जिसका अर्थ यह था कि पुरानी पीढ़ी के शेष लोग अध्याय 25 में नष्ट हो गए।

फिर भी व्यवस्थाविवरण संकेत देती है कि पुरानी पीढ़ी पूर्व में ही समाप्त हो चुकी थी जब इस्राएल ने मोआब प्रदेश में पहुँचने से पूर्व जेरेद नदी पार की। गिनती 21:12 और व्यवस्थाविवरण 2:14-18 जेरेद घाटी में इस्राएल के छावनी किए रहने के बारे में बताते हैं[12] रोय जेन ने लिखा,

> जैसा कि दोषी पुरानी पीढ़ी के शेष लोग अड़तीस वर्षों के समय में ही कादेश छोड़ने के बाद (व्यव. 2:14; के सन्दर्भ में देखें गिनती 21:12-13) और बालपोर की घटना से पहले मर गए थे (गिनती 25), इसलिए शित्तीम की मरी में मारे गए चौबीस हज़ार लोग (25:9) नई पीढ़ी के लोग थे।[13]

इनमें से चाहे जो भी विचार सही हो फिर भी गिनती 25 की व्याख्या एक ही है।

प्रश्न 2: इस मरी में कितने लोग मारे गए? (25:9)

पौलुस ऐसा क्यों कहता है कि "एक दिन में तेईस हज़ार मर गये" (1 कुरि. 10:8), जबकि गिनती 25:9 विशेष रूप से कहती है "और मरी से चौबीस हज़ार मनुष्य मर गए"? यह स्पष्ट भिन्नता अनेक तरीकों के साथ समझाई गई।

1. उदारवादी विद्वान प्रायः दावा करते हैं कि पौलुस की स्मरण शक्ति कम थी और उसने वहाँ पर एक गलती की। उनमें से कुछ विद्वान ऐसा कहते हैं कि उसने तेईस हज़ार लेवियों के साथ मरने वाले चौबीस हज़ार इस्राएलियों के साथ फेर बदल कर दिया जिनकी गिनती 26:62 में की गई। जो लोग पवित्रशास्त्र की प्रेरणा का आदर करते हैं उन्हें इस विचार को निरस्त कर देना चाहिए।

2. एक अन्य विवरण यह है कि 1 कुरिन्थियों 10, गिनती 25 में दी गई घटना के बारे में बात नहीं करता परन्तु निर्गमन 32 में पायी जाने वाली घटना के बारे में बताता है क्योंकि 1 कुरिन्थियों 10:7, निर्गमन 32 से उद्धरण लेता है। निर्गमन कहता है कि मरी में मरने वाले लोगों के अलावा (32:35), 3,000 पुरुष मारे गए (32:28), जो *सम्भावित रूप से* अन्य 20,000 लोग थे। इस विचार के अनुसार, पौलुस निर्गमन 32 में मरने वाले कुल लोगों के बारे में बताता है: अर्थात 3,000 लोग जो तलवार से मरे और 20,000 लोग जो मरी से मरे।[14]

3. सम्भावित रूप से पौलुस इब्रानी या यूनानी अनुवाद में गिनती की हस्तलिपि का प्रयोग कर रहा था जो चौबीस हज़ार के स्थान पर तेईस हज़ार बताता है। फिर भी अस्तित्वपूर्ण हस्तलिपियाँ एक समान रूप से चौबीस हज़ार बताती हैं।

4. सम्भावित रुप से पौलुस यहूदी परम्परा के अनुसार देख रहा था कि इस्राएल के एक हज़ार प्रधानों को लटका दिया गया (जैसा परमेश्वर ने आज्ञा दी थी), जिससे पाप के कारण मरने वाले लोगों की कुल संख्या चौबीस हज़ार हो जाती है। इस विचार के विरुद्ध यह देखा जाना चाहिए कि 25:9 इस प्रकार कहता है कि चौबीस हज़ार लोग “मरी से मर गए।”

5. सम्भावित रुप से पौलुस मात्र उन लोगों की संख्या के बारे में बात कर रहा था जो मरी से “एक दिन में” मारे गए (1 कुरि. 10:8)। शेष लोग किसी अन्य दिन मारे गए।

6. एक अन्य सुझाव यह है कि शायद तेईस हज़ार पाँच सौ के लिए एक पूर्णता प्रदान करने वाली संख्या चौबीस हज़ार है। यह अनुमान लगाया गया कि इस संख्या को आगे की ओर बढ़ाते हुए पूर्णता प्रदान करने के स्थान पर पौलुस ने इसे पीछे की संख्या के अनुसार तेईस हज़ार कर दिया।

अधिक सूचना के अभाव में इस प्रश्न के उत्तर का निश्चय करना कठिन है।

समाप्ति नोट

[1]आर. डेनिस कोले, “नम्बर्स,” इन *ज़ोंडर्वन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउन्ड्स कॉमेन्टरी*, वॉल्यूम 1, *उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण*, एड. जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 2009), 273. [2]टी. कार्सन, “गिनती,” *द न्यु लेमेन्स बाइबल कमेन्ट्री इन वन वोल्यूम*, एड. जी. सी. डी. हाउली, एफ़. एफ़. ब्रूस एन्ड एच. एल. एल्लिसन (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1979), 273. [3]रोनॉल्ड बी. एल्लन, “गिनती,” *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 919. [4]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 338. [5]वेन ग्रूडेम, *सिस्टमेटिक थियोलॉजी* (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1994), 205. [6]बाद के समय में पीनहास की धुन यहूदी लोगों के लिए प्रेरणा का एक स्रोत रही (सिराक 45:23; 1 मक्काबियों 2:26, 54; 4 मक्काबियों 18:12). [7]सी. एफ़. कैल एन्ड एफ़. डलेच, *द पेन्टाटुक*, वोल. 3, ट्रांसलेटर जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेन्ट्री ओन द ओल्ड टेस्टामेन्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी तिथि अज्ञात), 207. [8]डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः

हेन्ड्रिक्शन पब्लिशर्स, 2001), 276. [9]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 184. [10]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती*, द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 524.

[11]डेनिस टी. ओल्सन, गिनती, इंटरप्रिटेशन (लुइसविले: जॉन नॉक्स प्रेस, 1996), 153. [12]कार्सन, 273. [13] रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004), 735. [14]ग्लीसन एल. आर्चर, *एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ बाइबल डिफ़िकल्टीज़* (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1982), 401.